Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मधुबनी एवं वरली कलाओं का तुलनात्मक अध्ययन

मीना* डॉ. निशा गुप्ता**

* शोधार्थी, जे0 के0 पी0 पी0जी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) भारत
** एसोसिएट प्रोफसर, जे0 के0 पी0 पी0जी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारतीय लोक कला में मधुबनी एवं वरली दोनों ही कलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। गंगा के उत्तारी किनारों की तलहटी की उपजाऊ भूमि पर हरे-भरे पेड़ों की हरितिमा से मन को लुभाते प्राकृतिक दृश्य वाला बिहार राज्य नेपाल की सीमा को स्पर्श करता है। उत्तार में हिमालय, पूर्व में कौशिक नदी, दक्षिण में गंगा और पश्चिम में गंड़की नदी से घिरा उपजाऊ भूमि वाला यह भू-भाग आम, लीची एवं केले के बागानों के खूबसूरत प्राकृतिक सौन्दर्य से भरा है। कृषि एवं पशुपालन पर आजीविका हेतु आश्रित प्रत्येक वर्ष प्राकृतिक आपदाताओं से प्रभावित यह क्षेत्र आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है। बिहार राज्य के मधुबनी, दरभंगा सीतामढ़ी, सहरसा तथा पूर्णियाँ जिले मधुबनी कला के मुख्य केन्द्र रहे हैं। यह क्षेत्र भारत के पूर्वी भाग में स्थित है। महाराष्ट्र तथा गुजरात राज्य की सीमा के आस-पास के मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्र में निवास करने वाली महान वरली जनजाति भारत के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है। यह आदिवासी समुदाय महाराष्ट्र राज्य के ठाणे जिले के दहानू, तालासेरी, मोखडा, पालघर, शाहपुर तथा जवाहर तालूका में अधिकांश रूप से निवास करता है।

इनके तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि दोनों ही कलाएँ एक दूसरे से कुछ समानताएँ रखते हुए विभिन्नता के साथ अपने इतिहास एवं परम्पराओं को संजोये हुए है। मधुबनी कला धार्मिक अनुष्ठान एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से सम्बन्धित कला है। इस कला के चित्रों के विषय पारिवारिक कल्याण तथा वैयक्तिक कलात्मक पिपासा की शान्ति एवं मनोविनोद की प्रवृत्ति से उत्प्रेरित है। शैव, शाक्त एवं वैष्णव चिंतनधारा से प्रभावित यहाँ के चित्रों में स्वर्गिक आकृतियाँ-शिव, दुर्गा, काली, राम-सीता, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, विष्णु-लक्ष्मी, गौरी, गणेश आदि मुख्य विषय रहे हैं।

पौराणिक चरित्रों को मधुबनी कला के विषयों में विशेष रूप से एवं बहुतायत में चित्रित किया गया है, जबकि वरली कला एक जनजातीय लोक कला है। ये प्रकृति के पाँच तत्वों की उपासना करते हैं। ईश्वर में अटूट आस्था रखने वाला वरली समुदाय हिन्दू देवी देवताओं जैसे महालक्ष्मी, महागौरी (गंगा गौरी) आदि की भी पूजा करते हैं। हिमाई देवी, हिरवा, एक सिर्या, पंचसिर्या, वाघा देव, नारायण देव, पावश्या आदि इनके कुछ प्रमुख देवता है।

विवाह जैसे मांगलिक अवसर पर मधुबनी कला कुल देवता की स्थापना हेतु ज्यामितीय एवं तांत्रिक पद्धति पर आधारित कोहबर लेखन की रचना की जाती है। इसके अतिरिक्त कमलदह, बर्रे तथा बॉस अरिपन, नयना-योगिन, कामदेव, दशावतार तथा बाहरी दिवारों पर धनुष यज्ञ, सीता स्वयंवर तथा शिव पार्वती विवाह आदि के दृश्य प्रमुख होते है। जबकि वरली में विवाह जैसे मांगलिक अवसर पर देव चौक, लगन चौक की रचना की जाती है जहाँ ये अपने देवी-देवताओं नारायण देव, हिरवा, हिमाई, झोटिगां, देवी पालघाट को नव दम्पत्ति को आशीर्वाद देने के लिए आमंत्रित करते हैं।

मधुबनी कला में वनस्पतियों एवं पशु पक्षियों की आकृतियों को विभिन्न ज्यामीतिक एवं अलंकारिक आकारों में प्रतीकात्मक रूप से चित्रित किया जाता है। सिंह, नन्दी, हंस, मोर, गुरुड, आदि पशु एवं पक्षियों को देवी देवताओं के वाहन के रूप में चित्रित जाता है, जबकि वरली कला में पशु एवं पक्षियों का चित्रण इनके दैनिक जीवन के एक प्रमुख अंग के रूप में चित्रित किया गया है।

मधुबनी कला के विषय पौराणिक चरित्रों एवं धार्मिक ग्रन्थों पर आधारित है जबकि वरली कला की विषय वस्तु प्रकृति एवं दैनिक जीवन के क्रिया-कलाप, तर्पा, शहद एकत्रीकरण, फसल कटाई, प्रकृति पूजा, सामाजिक उत्सव आदि से सम्बन्धित है।

विषय वस्तु के आधार पर सामान्यत: दोनों कलाओं के चित्रण विषय एक दूसरे से बहुत भिन्नता रखते है परन्तु दोनों ही कलाओं में प्रतीकात्मक रूप से बेल-बूटो एवं पेड़-पत्तों आदि को वंश वृद्धि तथा पवित्रता के सूचक के रूप में चित्रित किया जाता है। दोनों ही कलाओं के चित्र आस्था एवं आध्यात्मिक विश्वास के सूचक है। मधुबनी कला में स्वास्तिक रचना शुभ एवं मंगल का प्रतीक है। वहीं वरली कला में आम के पत्तों एवं नारियल से बना कलश पवित्रता एवं पूर्णता का प्रतीक है। इस प्रकार दोनों ही कलाएँ प्रतीकात्मक रूप से आस्था एवं धार्मिक विश्वास का प्रतिनिधित्व करती हैं।

मधुबनी चित्रों में रंग संयोजन चटकीला है जो मुख्य रूप से तीन रंगों पर आधारित है- शुद्ध लाल, पीला एवं नीला। यहाँ लाल रंग को विभिन्न तानों में जैसे कहीं सिन्दूरी तो कहीं गुलाबी, कहीं गेरूआ तो कहीं नारंगी में प्रयोग किया गया है। इसकी रंग योजना स्वदेशी है जिसमें आमतौर पर गहरे लाल, हरे, नीले, काले रंगों को ही प्रयोग में लाया जाता है।

वरली कला विशेष रूप से लाल एवं सफेद रंगों पर आधारित कला है। यह कला गहरी पृष्ठभूमि पर सफेद रंग तक ही सीमित है। आधुनिकता से प्रभावित बहुरंगीय वरली पेंटिग भी बनायी जाने लगी है परन्तु मुख्य रूप से यह कला मेहंदी, इंडिगो, गेरू काले आदि रंगों की पृष्ठभूमि पर सफेद रंग से की जाने वाली कला है।

मधुबनी चित्रकारी चटकीले एवं विषम रंगों की विशेषता वाली प्रसिद्ध कला है। इसमें शुद्ध चटकीले रंगों का प्रयोग किया जाता है। दोहरे रेखांकन

के बीच चटख रंगों को भरने की तकनीक चित्रों को चटकीला प्रभाव देती है। इसमें शुद्ध रंगों के साथ-साथ रंग की विभिन्न तानों का भी प्रयोग किया जाता है, जबकि वरली चित्रकारी गहरी पृष्ठभूमि पर सफेद रंग से की जाने वाली कला है जिसमें केवल शुद्ध एवं सपाट रंगों से चित्र को पूरा किया जाता है। इसमें सीमित रंगों को प्रयोग में लाया जाता है।

मधुबनी एवं वरली दोनों कलाओं में मुख्य रूप से खनिज रंगों का ही प्रयोग किया जाता है। समान रूप से सपाट रंगों को ही प्रयोग में लाया जाता है तथा परिप्रेक्ष्य एवं छाया-प्रकाश का समान रूप से दोनों ही कलाओं में अभाव पाया जाता है। ये दोनों ही कलाएँ द्विआयामी कलायें है जिनमें त्रिआयामी प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है। आधुनिकीकरण एवं व्यवसायीकरण के कारण वर्तमान में दोनों ही कलाओं में खनिज रंगों का स्थान रासायनिक रंगों ने ले लिया है।

मधुबनी कला हिमालय की तलहटी में गंगा नदी एवं उसकी सहायक नदियों के उपजाऊ मैदानी भाग में पलने वाली कला है। यह भारत के पूर्वी भाग में स्थित है, जबकि वरली कला भारत के पश्चिम भाग में अरब सागर के निकट मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में पोषित कला है। मधुबनी कला बिहार राज्य के विभिन्न जिलों के गाँवों में बने कच्चे घरों की दीवारों पर चटकीले रंगों से चित्र संसार रचती है। वहीं वरली कला ठाणे जिले के विभिन्न तालुका में बनी हुल (झोपड़ियों) की नरवट की दीवारों पर गहरी पृष्ठभूमि पर सफेद रंगों से अपनी परम्पराओं की कहानी कहती हैं। मधुबनी एवं वरली दोनों ही कला भौगोलिक दृष्टिकोण से एक दूसरे से भिन्न है।

दोनों ही क्षेत्र कृषि एवं पशुपालन पर आश्रित होने के कारण प्रकृति से प्रभावित है, क्योंकि मानसून इन दोनों ही क्षेत्रों की जीवन शैली को प्रभावित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. जनार्दनमिश्र : भारतीय प्रतीक विधा, पृ0सं0 54-56
2. Documentation of Warli Painting of Maharashtra :- Ministry of Textiles, Government of India New Delhi (India) p.no. 13
3. कला संगम, मध्योत्तरी, 2011, अंक-01, पृ0सं0 39
4. https://theexampillar.com/geography_of_bihar
5. www.districtsindia.com

मधुबनी एवं वरली कला

****